उपसहांर

षष्ठ अध्याय
उपसंहार

सेठ गोविन्ददास जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार माने जाते है। आधुनिक हिन्दी नाटककारों में सेठजी का अग्रिम स्थान है। हिन्दी नाटक का तीसरा युग सेठ गोविन्ददास के नाटकों से प्रारंभ होता है। ''जिस प्रकार भारतेन्दु के आगे के नाटककार 'प्रसाद'जी थे, उसी प्रकार प्रसाद के आगे के नाटककार गोविन्ददास जी है। इस दिशा में प्रसाद जी विगत स्तंभ थे, तो सेठ जी नवीन प्रौढ स्तंभ है। पुराण, इतिहास और समाज तीनों ही क्षेत्रों में उनका कार्य युग प्रवर्तक नाटककार का है। सेठ जी का नाटय साहित्य लोक-कल्याण की पुनित कामना से प्रेरित है। उन्होंने अपने ऐतिहासिक नाटको में भारतीय संस्कृति एवं गौरव का सदा ध्यान रखा है।''

इस लघु शोध प्रबंध में मैंने सेठ गोविन्ददास जी के 'हर्ष', 'शशिगुप्त', 'शेरशाह' इन ऐतिहासिक नाटकों का अध्ययन किया हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय मे सेठ जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत सेठ जी का जन्म, माता-पिता, बाल्य-काल, शिक्षा-दिक्षा, साहित्य के प्रति अनुराग, बहुमुखी व्यक्तित्व, राजनीतिक व्यक्तित्व, वैवाहिक जीवन, सेवाव्रती गोविन्ददास, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, परिवार, वेशभूषा, मित्र मंडली, धनवान व्यक्ति तथा उनके समग्र साहित्य का परिचय दिया है। सेठ जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार हैं। उन्होंने अपने नाटकों में मानव जीवन को समझने के अनेकानेक द्वार उद्घाटित हुए हैं। सेठ जी आधुनिक युग के सर्वाधिक सजग, यथार्थवादी और प्रगतिशील नाटककार है। सेठ जी रईस,स्वाभिमानी और देशभक्त होने के कारण उन्होंने नौकरी नहीं की। सेठ जी की साहित्य संपदा बहुत ही समृध्द रही है।

द्वितीय अध्याय में नाटक का स्वरूप, कथावस्तु का स्वरूप, कथानक की विशेषताएँ बताकर वस्तुतत्व का महत्व और घटना विन्यास की दृष्टि से नाटकों की कथावस्तु के लिए आवश्यक शर्तों का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत किया है। इसमें सेठ जी के 'हर्ष' नाटक का उद्देश आदर्श राज्य और शासनप्राणली, सार्वजनिक हित और देशी-विदेशी राजाओं से परस्पर मैत्री के सिध्दांतों का प्रतिपादन करना , 'शशिगुप्त' नाटक का उद्देश समग्र

भारत को एकता के सूत्र में पिरोना, जन्मभूमि के परतंत्र भागों को स्वतंत्र करना, देश में एक साम्राज्य की स्थापना करना और उसे इतना शक्तिशाली बनाना है कि संसार का कोई भी देश उस पर आक्रमण न करे और उसके सामने मुँह तक उठाकर न देखे। साथ ही तीसरा नाटक शेरशाह का उद्देश राष्ट्रवाद की प्रतिष्ठा तथा राष्ट्रीय एकात्मता की स्थापना करना, हिन्दू-मुसलमानों को एकत्रित करना और एक साम्राज्य की स्थापना करना।

तृतीय अध्याय में प्रस्तावना, कथावस्तु, पात्र या चरित्रचित्रण, कथोपकथन, भाषाशैली, देशकाल वातावरण, उद्देश, शीर्षक की सार्थकता इन सभी तत्वों की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक की कथावस्तु अत्यंत सुसंगठित एवं श्रृंखला बद्ध है। सेठ जी के पात्रों का चरित्रचित्रण एकदम मानवीय है। उनका आलेखन स्वाभाविकता के धरातल पर हुआ है। सेठ जी के विवेच्य नाटकों के संवाद पात्रों के व्यक्तित्व का उद्घाटन करते है। सेठ जी के विवेच्य नाटकों में देशकाल चित्रण विवेच्य व्यक्ति के युग के अनुकूल हुआ है। साथ ही सेठ जी अपने नाटकों के माध्यम से विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति करने में सफल हुये है।

चतुर्थ अध्याय में विषय प्रवेश, समस्या के विभिन्न अर्थ एवं परिभाषाएँ, समस्या साहित्य की विशेषताएँ एवं उद्देश, प्रकार बताकर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक और नारी समस्याओं का विवेचन किया है। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों मे सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को प्रमुख स्थान दिया है। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में समस्याओं का निराकरण भारतीय रूढि और पद्धतियों के आधार पर किया है।

पंचम अध्याय में ऐतिहासिक नाटकों की पृष्ठभूमि, इतिहास अर्थ एवं परिभाषा, ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषा और स्वरूप, ऐतिहासिक नाटकों की श्रेणीयाँ तथा वर्गविभाजन और गुण, ऐतिहासिक नाटकों का कालविभाजन, विवेच्य ऐतिहासिक नाटकों में ऐतिहासिकता, ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ, विवेच्य नाटकों की ऐतिहासिक विशेषाताएँ तथा उद्देश बताया है। इसमें विवेच्य नाटकों की विषय वस्तु का आधार इतिहास है। सेठ जी ने अपने नाटकों ने अपने समय की युगीन परिस्थितीयों और वातावरण का चित्रण अपने युग के अनुसार किया है। विवेच्य नाटकों में इतिहास और कल्पना का सम्बन्ध है। साथ ही विवेच्य नाटकों का संबंध अतित की घटना और पात्र प्रसंगो से होता है।

संदर्भ
ग्रंथ -सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

अ.नं.	लेखक	ग्रंथ	प्रकाशक	संस्करण
1.	सेठ गोविन्ददास	'हर्ष'	एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली ।	1935
2.	सेठ गोविन्ददास	'शशिगुप्त'	एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली।	प्रथम,1942
3.	सेठ गोविन्ददास	'शेरशाह'	एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली।	1945

संदर्भ ग्रंथ

1.	डॉ. ओझा दशरथ	आज का हिन्दी नाट क प्रगति और प्रभाव	राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली - 6।	प्रथम, 1984
2.	डॉ. प्रतापनरायण टंडन	हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास	हिन्दी साहित्य भांडार, लखनऊ।	प्रथम, 1959
3.	विनोद रस्तोगी	हिन्दी नाटक : सिध्दान्त और विवेचन		1967
4.	डॉ. धनंजय	हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व	रचना प्रकाशन, इलाहाबाद।	प्रथम , 1970
5.	डॉ. लक्ष्मीनारायण भारद्वाज	हिन्दी-मराठी के ऐतिहासिक नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन	राजेश रजपूत , दिल्ली।	द्वितीय,1973

6.	सूरज कान्त शर्मा	हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण	एस.ई.एस.बुक कम्प नी, चाहईदारा, फव्वारा, दिल्ली - 6 ।	प्रथम, 1973
7.	हिन्दी के प्रतिक नाटक	रमेश गौतम	नचिकेता प्रकाशन, 9187,गली नं. 4, मुलतानी ढांडा, पहाडजंग, नई दिल्ली।	प्रथम, 1980
8.	डॉ. सावित्री स्वरूप	नव्य हिन्दी नाटक	अभिनव प्रकाशन, पी.रोड,कानपुर - 12	प्रथम, 1967
9.	डॉ. निर्मला हेमन्त	आधुनिक हिन्दी नाटयकारों के नाटय -सिध्दान्त	अक्षर प्रकाशन प्रा.लि 2136, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 6।	प्रथम,1973
10.	प्रो. रामचरण महेन्द्र	सेठ गोविन्ददास - नाटय कला तथा कृत्तियाँ	गौरी शंकर शर्मा, भारती साहित्यमंदीर, फव्वारा, दिल्ली।	प्रथम, 1959